CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2022, Revised on 18th Feb. 2022, Accepted 15th Mar. 2022

शोध–आलेख

ग्रामीण अंचल में जनसख्या वृद्धि से शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर दुष्प्रभावों का अध्ययन (जयपुर जिले के संन्दर्भ में)

* **अन्जु पारीक**, *व्याख्याता*
एस.एस.जी पारीक पी.जी. कॉलेज ऑफ एडूकेशन, जयपुर
Email-aaravpareek6@gmail.com, Mob.- 9782749516

मुख्य शब्द– *जनसंख्या, शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक, जनसांख्यिकी, जनांकिकी आदि।*

शोध सारांश

*जनसंख्या बढने का मतलब है कि हमें ज्यादा लोगों के लिए शिक्षा के साधन, रोजगार, खाना और रहने के लिए मकान चाहिए। हमारी जनसंख्या में बहुत से लोग गरीब, साधनहीन, पिछडे और अति पिछडों में शामिल हैं तथा स्वास्थ्य सेवाओं का बुरा हाल है । तथा शिक्षा व अन्य सम्बन्धित साधनों का अभाव देखने को मिलता है। हमारे यहॉ के प्राचीन धर्मग्रन्थ **'योगवशिष्ठ'** जनसंख्या में कहा गया कि **'जब किसी देश की जनसंख्या बहुत अधिक बढ जाती है तो अकाल, महामारी, युद्व या भूकम्प आदि किसी दैवी या भौतिक आपत्ति से उसका विनाश हो जाता है'** पर यह सब विचार सामाजिक, नैतिक द्रष्टि से ही प्रकट किये गये थे।*

प्रस्तावना

जनसंख्या की इस असाधारण वृद्धि ने संसार के समक्ष एक भीषण समस्या उपस्थित कर दी है,क्योंकि यह वैयक्तिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक पक्ष पर दूषित प्रभाव डालती है। इसका प्रभाव व्यक्ति के सुख, स्वास्थ्य एवं सम्पत्ति पर व राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शान्ति पर पड़ता है। इस समस्या की भीषणता को देखकर, कुछ विचारवान व्यक्तियों ने यह मत प्रकट किया गया है कि जनसंख्या की वृद्धि ने मानव–जाति के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। अतः जनसंख्या की वृद्धि अथवा विस्फोट की गम्भीरतम् समस्या बताते हुए डॉ. लुला व डॉमूर्ति ने लिखा है कि– **"जनसंख्या वृद्धि की गम्भीरतम् समस्या ने हमारे समय के हमारे विश्व को मुसीबत में फँसा दिया है।"**

संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदन में कहा गया कि जब 1970 में विश्व की जनसंख्या 333 करोड़ व 20 लाख थी जिस क्रम से पिछले दशकों में यह जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई है और आज यह वर्तमान अप्रैल 2022 तक 7.9 अरब हो गयी है।

अतः इस **जनसंख्या वृद्धि की गम्भीरतम्** समस्या से देश के विकास का सपना कदापि साकार नहीं हो सकता है। अतः स्थानीय सरकार को चाहिए कि वह ग्रामीण विकास पर विशेष जोर दे तथा शहरी विकास पर भी सामजस्य बनाये रखे। सरकार को ऐसी

योजनाओं का निर्माण करना होगा जिससे गॉवों के ताने–बाने में परिवर्तन हो सके। गॉवों के विकास के लिए ऐसे ग्रामीण व्यक्ति तैयार करने होंगे जो ग्रामीण विकास में अपनी विशेष भूमिका अदा कर सकें और ऐसे व्यक्तियों के निर्माण में शिक्षा की अहम् भूमिका है। ग्रामीण अंचल के व्यक्ति (बालक–बालिका) ही देश के विकास की रीड की हड्डी है और शिक्षा उसको तैयार करने वाला उपकरण है। अतः उपकरण ऐसा होना चाहिए जिससे एक अच्छे साधन का निर्माण किया जा सके। यह आवश्यक है कि ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों की जनसंख्या वृद्धि के शैक्षिक दुष्प्रभावों पर यथा शीघ्र विचार किया जावे तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक दुष्प्रभावों पर सरकार ने प्रत्येक क्षेत्र पर ध्यान तो दिया पर वह विकासात्मक दृष्टि से नगन्य है जो विचारणीय पहलू है। इसके परिणाम स्वरूप देश का विकास तीव्रता से सम्भव हो सकें।

ग्रामीण अंचल की जनसंख्या वृद्धि के शैक्षिक दुष्प्रभावों से यह अभिप्राय है कि ग्रामीण अंचल में जनसंख्या वृद्धि की शिक्षा प्राप्त करने में कौन–कौनसी कठिनाइयाँ व समस्याएँ आती है। राष्ट्र का चहुंमुखी विकास, उन्नति, प्रगति किशोरों के भविष्य पर ही निर्भर करती है। परिवार का भावी सुख–समृद्धि तथा समाज व राष्ट्र का उत्थान अथवा पतन आने वाली पीढी पर ही निर्भर है।

शहरीकरण को लेकर सरकार का नजरिया यह है कि यह इस पर सियासी राजनीति करने के बजाय इसे मौके के रूप में देखा जाना चाहिए उसके मुताबिक शहरों में गरीबी दूर करने की ताकत होती है और हमें इस ताकत को और आगे बढाना चाहिए ताकि आर्थिक समृद्धि का स्वतः प्रसार हो सके।

भारत में जनसंख्या वृद्धि

वास्तव में जनसंख्या वृद्धि का ज्ञान जन्म–दर और मृत्यु–दर में अन्तर से होता है। जन्म–दर अधिक होना और मृत्यु–दर कम होना यही जनसंख्या वृद्धि की गति प्रदर्शित करता है। यह प्रति हजार या प्रति सैंकडा माना जाता है। वर्तमान में स्वास्थ्य सेवाओं की अच्छी व्यवस्था है। महामारी, प्लेग, हैजा, माता आदि रोगों पर पूर्ण नियन्त्रण हो गया है। खाद्य पदार्थ खूब उत्पन्न किये जाते हैं तथा अकाल आदि की स्थितियाँ अब संसार में कम ही आती हैं। जीवनयापन के लिए भोजन, पानी ,हवा आदि सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि हो गई। अतः मानव स्वस्थ्य जीवन अधिक अवधि तक जी सकता है। अकाल मृत्यु अब कम ही होती है। मनोरंजन और विचार–विनिमय के साधनों का विकास तथा स्तर भी उत्तम हो गया है। अतः पूर्व वर्षों की अपेक्षा वर्तमान में जीवन की सम्भावनायें अधिक ही हैं। मानव अधिक लम्बी आयु तक जीवित रहता हैं। अतः स्वाभाविक है कि जनसंख्या वृद्धि की गति अधिक रहती है। वर्तमान में इसलिए बच्चों और वृद्धों की जनसंख्या अधिक विद्यमान रहती है। भारत में तो 15 वर्ष की आयु से कम के बच्चे लगभग 42 प्रतिशत है। जब ये सभी बड़े होकर विवाहित जीवन जियेंगे तब सोचिए कि गतिपूर्ण जनसंख्या वृद्धि की सम्भावनाएँ कितनी अधिक हैं।

जनसंख्या वृद्धि के तथ्यों की विषयवस्तु को सात विषय क्षेत्रों में निम्नलिखित प्रकार से बॉटे गए है–

(अ) जैविक तत्त्व, परिवार तथा जनसंख्या वृद्धि।

(ब) सामाजिक विकास और जनसंख्या वृद्धि।

(स) जनसांख्यिकी तथ्य और जनसंख्या वृद्धि।

(द) संसाधनों का विकास और पर्यावरण संरक्षण।

(य) स्वास्थ्य, पोषण और जनसंख्या वृद्धि।

(र) आर्थिक विकास और जनसंख्या वृद्धि।

(अ)शैक्षिक।

विशिष्ट तथ्य

1. भारत में प्रति वर्ष 21 करोड़ बच्चों का जन्म होता है, जिनमें से 13 करोड़ जीवित रहते हैं।
2. भारत की जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिशत भाग 15 वर्ष से कम आयु का है।
3. भारत की जनसंख्या प्रति वर्ष एक करोड 60 लाख बढ रही है।
4. भारत की जनसंख्या की वृद्धि प्रति वर्ष 2.5 प्रतिशत है, जो विश्व में उच्चतम है।
5. भारत में प्रति व्यक्ति की आय 669 रूपये है, जो विश्व में निम्नतम है।
6. विश्व का प्रत्येक सातवॉ व्यक्ति भारतीय है।
7. विश्व की 2.4 प्रतिशत भूमि, भारत में है, पर इस भूमि पर विश्व जनसंख्या का
8. लगभग 16 प्रतिशत भाग निवास करता है।

शोध की आवश्यकता

विशाल भारत की जनसख्या वृद्धि के विभिन्न दशकों के आँकडों का अवलोकन किया। साथ ही यहां की जन्म दर मृत्यु दर एवं आवास–प्रवास के तथ्यों का विश्लेषण भी किया। ये सारे तथ्य इस बात के द्योतक है कि भारत में प्रतिवर्ष जनसंख्या वृद्धि तेजी से हो रही है। जिसने हमारे शैक्षिक विकास, आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास को प्रभावित किया है। भारत आज विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे नम्बर का देश है। बढती जनसंख्या ने हमारे यहां बेकारी और गरीबी में वृद्धि की है। इसलिए कहा जाता है कि भारत के जनसंख्या में वृद्धि हो रही है और यदि इसे समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो इसके भंयकर परिणाम होंगे। भारत में इस जन विस्फोट या दूसरे शब्दों में अनियंत्रित जनसख्या वृद्धि के लिए अनेक कारक उत्तरदायी है। इस शोध के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा ग्रमीण अंचल में जनसंख्या वृद्धि की शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों को जानने का प्रयास किया है किया गया है कि ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के कौन कौन से शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों को कौन कौनसे कारक प्रभावित करते हैं ? तथा इस समस्या को शोधकर्त्ता ने स्वयं अनुभव भी किया कि इसका कितना दुष्प्रभाव है और साथ ही आवश्यक सुझावों का अन्वेषण भी प्रस्तुत शोध की आवश्यकता रही है।

समस्या कथन

''ग्रामीण अंचल में जनसख्या वृद्धि से शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर दुष्प्रभावों का अध्ययन (जयपुर जिले के सन्दर्भ में)''

अध्ययन के उद्देश्य

- ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के छात्रों की जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के छात्रों की जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के छात्रों की जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक दुष्प्रभावों

अध्ययन के चर

1 **परतन्त्र चर :–** जनसंख्या वृद्धि के शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभावों का अध्ययन।

2. **स्वतन्त्र चरः–** जिला, लिंग, विद्यालय ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र (सरकारी और निजी), धर्म, आदि।

प्रस्तुत शोध का परिकल्पना

1. जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. जयपुर जिले के के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण अंचल में जनसंख्या वृद्धि के शैक्षिक, आार्थिक तथा सामाजिक स्तर के दुष्प्रभावों से सम्बन्धी आंकडों एवं तथ्यों के सकंलन हेतु सर्वेक्षण विधि के माध्यम से ही सम्बन्धित तथ्य सुगम, सरल तथा विश्वसनीय तरीके से प्राप्त हो सकते हैं। साथ ही इसमें वर्तमान में ग्रामीण अंचल के छात्रों में जनसंख्या वृद्धि की शैक्षिक, आार्थिक तथा सामाजिक स्तर के दुष्प्रभावों का मूल्यांकन भी सम्भव हो पाता है। इसलिए शोधकर्त्ता ने अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

अध्ययन का सीमाएं

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन के लिए प्रोज्य जनता के रूप में माध्यमिक स्तर की दशवीं कक्षा के विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए चुना गया है।
2. अध्ययन का स्थान राजस्थान राज्य का जिला जयपुर चुना गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर की दशवीं कक्षा के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यालयों को शोध कार्य हेतु चुना गया है ।
4. प्रस्तुत अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थी, जिनमें 300 छात्र व 300 छात्राओं को शोध कार्य हेतु चयनित किया किया गया है ।

अनुसंधान की प्रक्रिया

शोध विधि वह मार्ग है, जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है। प्रस्तुत शोध कार्य समूह पर आधारित है। अतः प्रस्तुत शोध के उदेश्यों, परिकल्पनाओं एवं विशेषताओं के दृष्टिकोंण से दत्त सकंलन लिये हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में केवल जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल के 600 विद्यार्थियों का चयन किया है जिसमें 300 विद्यार्थी निजी माध्यमिक विद्यालयों से तथा 300 विद्यार्थी राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा दशवीं कक्षा में (300 बालक तथा 300 बालिकाएं) लिये गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में केवल राजस्थान के जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का चयन किया है

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उपकरण

प्रस्तत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने ग्रामीण अंचल से जनसंख्या वृद्धि के शैक्षिक, आार्थिक तथा सामाजिक स्तर के दुष्प्रभावों से सम्बन्धी जानकारी के लिए स्वंय निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया है ।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

(अ) मध्यमान

(ब) प्रामाणिक विचलन

(स) टी मूल्य या क्रांतिक मूल्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष

1. जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्रस्तुत शोध में उपरोक्त परिकल्पना स्वीकार की गयी है क्योंकि धर्म के आधार पर ग्रामीण अंचल में जनसंख्या वृद्धि से शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर प्राप्त मूल्य सार्थक मूल्य से अधिक है अतः दुष्प्रभावों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों का जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्रस्तुत शोध में उपरोक्त परिकल्पना स्वीकार की गयी है क्योंकि ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों में आज के वर्तमान दौर में शैक्षिकता का बढता प्रभाव व पर्याप्त सुविधाएं का होना तथा आज के डिजिटल तकनीक ने सबको एक साथ खडा कर दिया है अतः जयपुर जिले के ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र में कोई अन्तर नहीं पाया गया ।
3. जयपुर जिले के के ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों की जनसंख्या वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक दुष्प्रभावों की अभिवृत्ति के संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. प्रस्तुत शोध में उपरोक्त परिकल्पना स्वीकार की गयी है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के सन्दर्भ में सम्बन्धी भ्रान्तियाँ दूर होंगी तथा इसके सम्बन्ध में ग्रामीण अंचल व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में उचित दृष्टिकोण विकसित होने के कारण आर्थिक दुष्प्रभावों का अभिवृत्ति के संबंध में कम प्रभाव देखने को मिला है।

भावी शोध के लिए सूचना

1. इस अध्ययन को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में शैक्षिक व आर्थिक दुष्प्रभाव की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
2. इस अध्ययन को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में आर्थिक एवं सामाजिक दुष्प्रभाव की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
3. इस अध्ययन को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में शैक्षिक एवं सामाजिक दुष्प्रभाव की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
4. इस अध्ययन को ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक दुष्प्रभाव की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध का उपयोग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में समानता के लिए शैक्षणिक द्रष्टिकोंण विकसित हो सकेगा।
2. प्रस्तुत शोध का उपयोग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए सामाजिक नीति निधारकों के लिए सामाजिक विकास में योगदान में उपयोग हो सकेगा ।
3. प्रस्तुत शोध का उपयोग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए आर्थिक विकास में योगदान हो सकेगा।
4. प्रस्तुत शोध का उपयोग समाज में व्याप्त भ्रान्तियॉ, अन्धविश्वासों को दूर करने में उपयोग हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल एस. के. (1977), जनांकिकी के सिद्धान्त, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ।
2. दुबे एवं मिश्र (1977), जनांकिकी एवं जनसंख्या अध्ययन, साहित्य भवन, आगरा।
3. राज्य शिक्षा संस्थान उ.प्र.(1982),जनसंख्या– शिक्षा दिग्दर्शिका मुख्य विचारणीय बिन्दु,उत्तर प्रदेश।
4. साहनी, निर्मल एवं कुमार मिथलेश(1987), जनसंख्या– शिक्षा भारत जनसंख्या नीति में, जनसंख्या केन्द्र, लखनऊ उत्तर प्रदेश ।
5. वात्स्यायन(1982), सामाजिक जनांकिकी एवं जनसंख्यात्मक समास्याएं, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली।

**** Corresponding Author***

अन्जु पारीक, *व्याख्याता*

एस.एस.जी पारीक पी.जी. कॉलेज ऑफ एडूकेशन, जयपुर

Email-aaravpareek6@gmail.com, Mob.- 9782749516